५. तोरे दरशसे हर्ष भयो ।

तोरे दरशसे हर्ष भयो, मेहेरबा दीन आधार ॥धृ.॥
तुम्हरे जैसी कोई न हस्ती, इस जगमें दातार ॥

अनुपम सुंदर रूप तुम्हारा, नैना रहे निहार ।
कोटी सूर्यका तेज हो फीका, तुमपर देवे उतार ॥१॥

मेहेर नामपे वारी जाऊँ, जपूँ नाम हरबार ।
तुम्हरे सिवा कोई उतर न पावे, कठिन कठिन भवधार ॥२॥

क्या महिमा मै गाऊँ तुम्हारी, मै बालक सरकार ।
ब्रह्मा शंकर शेष थक गये, कोई न पाया पार ॥३॥

Scanned by CamScanner

महिमा तुम्हरी बहुत रही पर मैं अनजान चकोर ।
चोंचभरे बूंदे चुनलीये, तुम्हरे नाम आधार ॥४॥

तुमहि मेरे वेद ग्रंथ हो, तुमही हो सब सार ।
'मधुसूदन' तो दास तुम्हारा, कर दो बेड़ा पार ॥५॥

Scanned by CamScanner

६. क्यों नाज़ न हो मोहे

क्यों नाज़ न हो मोहे किस्मतपे, जो मेहेर दरश नसीब हुवा ॥धृ.॥
वो किस्मतवाले थोड़े हैं, जिनको दर्शनका लाभ हुवा ॥

कई लाख तरसते दीवाने, कोई दिन गिनते कई दरपे खड़े
कोई ध्यान लगाए बैठे हैं, अबतक न दरशका लाभ हुवा ॥१॥

ऐसी महिमा है दरशनकी, भक्तोंने कही, संतोंने कही ।
सौ बार पढ़ा, सुनकर न हुवा, वो एक दरशसे काम हुवा ॥२॥

एक बार कोई देखे जो उन्हें, नहि ज्ञान सुनानेकी हाज़त ।
वो ऐसी ही हस्ती है जगमें, जो दरशनसे मोहे ध्यान हुवा ॥३॥

नहि आस है सिद्धी शक्तीकी, नहिं मोक्षकि है नहिं मुक्तीकी ।
है आस तोरे नित दरशनकी, 'मधुसूदन' माँगत लीन हुवा ॥४॥

Scanned by CamScanner